कबीरदास

—

जन्म : सन् १३९८ ई० ।

मृत्यु : सन् १४९४ई० ।

कबीर के जन्म के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। 'कबीर चरितबोध' नामक ग्रन्थ उनकी जन्मतिथि चौदह सौ पचपन विक्रमी ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार को स्वीकार करता है। उनके पदों से स्पष्ट है कि वे काशी में पैदा हुए थे—'काशी में हम प्रकट भये, रामानन्द चेताये' आदि। उनके जन्म के सम्बन्ध में एक किवदन्ती प्रचलित है कि एक बार एक ब्राह्मण अपनी दुःखिनी विधवा पुत्री के साथ महात्मा रामानन्द के पास गया। उन्होंने उस कन्या को पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। कहा जाता है कि महात्मा का आशीर्वाद सत्य हुआ और विधवा को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई, परन्तु लज्जावश वह उसे लहरतारा तालाब के किनारे रख आई। इसी बीच नीरू और नीमा नामक मुसलमान दम्पत्ति उधर से आ निकले। वे बालक को उठाकर घर लाये। उन्होंने उसका पालन-पोषण किया। वही बालक आगे चलकर महात्मा कबीर हुआ।

कबीर ने महात्मा रामानन्द को अपना गुरु बनाया। वे एक दिन आधी रात के पश्चात् काशी के एक घाट पर जा लेटे। रामानन्द जी ब्रह्ममुहूर्त में गंगा-स्नान को नित्यप्रति जाया करते थे। उस दिन जाते समय जब उनका पाँव राह में लेटे कबीर पर पड़ा तो उनके मुंह से सहसा 'राम-राम' निकल पड़ा। इस राम-नाम उच्चारण को कबीर ने गुरुमन्त्र समझ कर ग्रहण कर लिया।

उनका पारिवारिक जीवन भी अनिश्चित-सा है। कुछ लोग मानते हैं कि लोई उनकी पत्नी का नाम था। उनके पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था।

Scanned with CamScanner

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने स्वयं ही लिखा है :

"मसि कागज छूयो नहीं, कलम गही नहीं हाथ।"

कबीर-वाणी और उनकी शिक्षाओं का संग्रह 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है। विद्वानों द्वारा कबीर-वाणी के तीन भाग किए गए हैं —

(१) सबद,
(२) साखी और
(३) रमैनी।

कबीर सन्त पहले थे और कवि बाद में। अन्धविश्वास, पक्षपात, कट्टरता और बाह्य प्रदर्शन का उनके जैसा घोर और शक्तिशाली विरोधी हमें नहीं मिलता। अपनी आत्मा की आवाज के वे अनुचर थे।

कबीर की भाषा परिमार्जित नहीं हो पाई थी। कबीर को अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी, अरबी, फारसी आदि सभी भाषाएँ सुनने को मिलीं। इसलिए उन्होंने विभिन्न भाषाओं के शब्द का प्रयोग किया। उनकी भाषा को सधुक्कड़ी भाषा के नाम से अभिहित करने का यही कारण है।

साखी – सुधा

—

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप॥ १ ॥
जो तोकों काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोकों फूल के फूल हैं, बाकों हैं तिरसूल॥ २ ॥
लाली मेरे लाल की जित देखों तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥ ३ ॥
माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर॥ ४ ॥
मूँड मुड़ाए हरि मिलैं, सब कोई लेय मुड़ाय।
बार-बार के मूड़ते, भेड़ न बैकुण्ठ जाय॥ ५ ॥

Scanned with CamScanner

खोद-खाद धरती सहै, काट-कूट बनराय।
सन्त सहै दुरजन वचन, औरन सहा न जाय॥ ६ ॥
तेरा साईं तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि-फिर ढूंढै घास॥ ७ ॥
जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, साँस लेत बिनु प्रान॥ ८ ॥
माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि।
मनुवाँ चहुँ दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाहि॥ ९ ॥
रात गँवाई सोयकर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥ १० ॥

शब्दार्थ

साखी-सुधा

१. साँच = सत्य, हिरदे = हृदय, आप = ईश्वर / गुरु।
२. तोकों = तुम्हारे लिए, ताके = उसके लिए, तिरशूल = त्रिशूल 'पश्चाताप की पीड़ा'।
३. लाल = प्रियतम, परमात्मा, लाली = प्रकाश, लाल होना = उसी के स्वरूप में विलीन होना।
४. मन का फेर = मन का अस्थिर रहना / विषय वासनाओं में घूमना, मनका = माला के दाने। कर का मनका डार दे = हाथ की माला को छोड़ दे। मन का मनका फेर = मन की माला को फेर / सच्चे मन से ईश्वर का भजन कर।
५. मूंड = सिर, मुड़ाए = मुड़ाकर।
६. खोद-खाद = खोदने के प्रहार, काट-कूट = काटने के कष्ट।
७. साईं = भगवान / स्वामी, पुहुपन में = फूलों में, बास = महक, सुगंधि।
८. जा घट = जिसके शरीर / हृदय में, खाल = धौंकनी।
९. मनुवाँ = मन, चहुँ / दहुँ दिस = दसों दिशाओं में।
१०. गँवाई = बिता दी, हीरा जनम अमोल = यह मनुष्य का शरीर हीरे के समान अमूल्य था। कौड़ी बदले जाय = व्यर्थ में नष्ट हुआ जा रहा है।

Scanned with CamScanner

टिप्पणी

'साखी' के रूप में कबीर ने दोहों का प्रयोग किया है और 'सबद' के अन्तर्गत गेय पदों का प्रयोग किया गया है। 'रमैनी' में कवि ने कुछ चौपाइयों के अनन्तर दोहा छन्द का भी प्रयोग किया है।

प्रश्न और अभ्यास

१. कबीर की साखियों के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :

(क) सत्य बोलना सबसे बड़ा तप है और ....।

(ख) यदि कोई मनुष्य तुम्हारे लिए काँटे बोता है तो भी तुम्हारा कर्त्तव्य है कि .....।

२. नीचे कबीर के दो दोहों का सार दिया गया है, सम्बद्ध दोहे का पहला चरण प्रत्येक के सामने लिखिए—

(अ) जब तक स्थिर मन से मनुष्य भगवान् का भजन नहीं करेगा तब तक उसका उद्धार नहीं होगा।

(आ) सच्ची सहनशीलता पृथ्वी, वन और सन्त में ही होती है।

३. निम्नलिखित शब्दों के आधुनिक रूप दीजिए।

जित, तित, जुग, जा, मसान, मिरग।

४. कवि ने हाथ की माला के स्थान पर मन की माला फेरने की प्रेरणा क्यों दी है ?

५. बुराई का बदला भलाई से देने का क्या परिणाम होता है ?

६. ये भाव जिन दोहों में प्रकट हुए हैं, वे दोहे बताइए :

(क) सच्चे हृदय से प्रेम करने पर ही परमात्मा प्रसन्न होते हैं। केवल दिखावा करना व्यर्थ होता है।

(ख) ईश्वर को बाहर खोजना भूल है। वह तो सबके भीतर समाया हुआ है।

७. कबीर का जीवन परिचय अपने शब्दों में लिखिए।

Scanned with CamScanner